International Journal of Applied Research 2020; 6(6): 364-366

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(6): 364-366
www.allresearchjournal.com
Received: 22-04-2020
Accepted: 24-05-2020

डॉ. अशोक कुमार
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़ झारखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अशोक कुमार
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़ झारखंड, भारत

भारत की सामाजिक व आर्थिक बदलाव में शिक्षा की भूमिका

डॉ. अशोक कुमार

सारांश
मानव की प्रवृत्ति बदलाव है। वह परम्परावादी और गत्यात्मक दोनों ही है। एक तरफ तो वह अपने पारम्परिक मूल्यों, नियमों आदि से चिपका रहता है दूसरी तरफ वह नये दृष्टिकोण, तकनीकों और मूल्यों का स्वागत भी करता है। यदि सामाजिक बदलाव नहीं होते तो समाज आज भी प्रागैतिहासिककाल से बाहर नहीं निकल पाता। मानव की प्रकृति बदलाव करना है। वैज्ञानिक विकास और शिक्षा सामाजिक बदलाव के दों सबसे बड़े एजेण्ट है। सामाजिक बदलावों का जन्म व्यक्ति के अन्दर उत्पन्न असन्तुष्टि होती है। वह एक कार्य से ऊब जाने पर बदलाव चाहता है। समाज व्यक्तियों का वह समूह होता है जो सामान्य उद्देश्यों, मूल्यों और सम्बन्धों के कारण एक स्थान पर रहने के लिए बाध्य हैं। उनमें आपसी सहयोग पाया जाता है। समाज उस समय प्रगति करता जब उसमें पूरी तरह शान्ति और समृद्धि होती है। समाज एक हमेशा बदलने वाली प्रक्रिया है। इसके बने रहने के लिए इसमें स्थिरता की आवश्यकता होती है।

कुटशब्दः सामाजिक बदलाव, आर्थिक बदलाव, शिक्षा

प्रस्तावना
समाज निरन्तर गतिशील रहता है। समाज की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तनशीलता का ही परिणाम है कि आज हमारे समाज की रचना और स्वरूप में भारी परिवर्तन आ गया है। आज का समाज आज से एक सौ वर्ष पूर्व के समाज से या एक हजार वर्ष पूर्व के समाज से बहुत भिन्न है। इस अन्तराल में जो परिवर्तन हुये हैं उससे आज के समाज और उस समय के समाज में जमीन–आसमान का अन्तर आ गया है। इस प्रकार समाज में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। किसी समाज में परिवर्तन बहुत तीव्र गति से होते हैं और किसी समाज में बहुत मन्द गति से। समाज की विशेषता यह भी है कि सामान्यतः वह आगे की ओर ही बढ़ता है। इसमें हुआ परिवर्तन प्रगति का ही सूचक होता है।

सामाजिक बदलावः सामाजिक बदलाव का अर्थ है सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक अन्तःक्रियाओं, संस्थाओं और सामाजिक सम्बन्धों में बदलाव आना। जब भी कभी सामाजिक नियमों, दृष्टिकोणों, रिवाजों और उद्देश्यों में बदलाव आते हैं तो इसे सामाजिक बदलाव कहते हैं।

आर्थिक बदलावः आर्थिक बदलाव शब्द आर्थिक प्रगति और उन्नति के साथ जुड़ हुआ है। आर्थिक विकास को एक निश्चित अवधि के भीतर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए अर्थव्यवस्था की क्षमता में वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

शिक्षाः शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपने पारिवारिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों को पूर्ण कर सकता है। शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का समुचित विकास करती है जिससे वह कल्पना, तर्क या जिज्ञासा द्वारा नवीन योगदान दे सके। शिक्षा द्वारा व्यक्ति की आन्तरिक शक्ति का पूर्ण लाभ उठाया जा सकता है।

सामाजिक बदलाव के कारक
सामाजिक बदलाव के निम्नलिखित कारक हैं–

1. **भौगोलिक कारकः** सामाजिक परिस्थितियों का निर्धारण भौगोलिक मौसम के कारण होता है। जब भी कभी भौगोलिक बदलाव होते हैं तब सामाजिक बदलाव आते हैं, जैसे– लन्दन में भयंकर आग के कारण आधुनिक लन्दन का जन्म हुआ।

2. **विचारधारा:** सामाजिक बदलाव के महत्त्वपूर्ण कारक विचार होते हैं। उदाहरण के लिए स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व की विचारधारा ने फ्रांसीसी क्रान्ति को जन्म दिया। रूस में लेनिन और भारत में गाँधी के विचारों ने समाजों को प्रभावित किया है।
3. **आर्थिक योजना:** विकसित होती हुई आर्थिक व्यवस्था सामाजिक बदलाव को जन्म देती है। आर्थिक, विकास से विकास दर, प्रति व्यक्ति आय, शिक्षा और राजनैतिक भागीदारी बढ़ती है। इस प्रकार उत्पादन में वृद्धि होने से सामाजिक वर्गों के अन्तःसम्बन्धों और सहयोग और अन्तःद्वन्दों में बदलाव आता है। इस प्रकार समाज में एक नई व्यवस्था जन्म लेती है।
4. **वैज्ञानिक और तकनीकी:** प्रत्येक वैज्ञानिक खोज के बाद मनुष्य और उसके सामाजिक सम्बन्धों में बदलाव आता है। इंग्लैण्ड में औद्योगीकरण के बाद लोग खेती से कारखानों की तरफ चले गये। वैज्ञानिक खोजों से कुछ सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है। जनसंचार के साधनों ने बहुत से देशों की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों को बदला। परमाणु परीक्षणों ने भी कई देशों की सोच को बदला।
5. **सांस्कृति कारक:** वे समाज जो दूसरी संस्कृतियों के सम्पर्क में आते हैं, उनमें जल्दी बदलाव आते हैं, अंग्रेजों के भारत आने से पहले भारतीय समाज स्थिर था। उन्होंने भारत में नई तकनीकों और पाश्चात्य अवधारणा का परिचय कराया। इसलिए भारत में जबरदस्त बदलाव आया।
6. **क्रांति:** कई बार कुछ महान् लोग क्रांति ला देते हैं। वह पूरे समाज को बदल देते हैं। फ्रांस की क्रांति का प्रभाव समाज पर पड़ा और उसने बहुत ज्यादा सामाजिक बदलाव को जन्म दिया। रूसी क्रांति ने पूरे समाज को बदलकर रख दिया।
7. **जनसंख्यात्मक कारक – (Demographic Factors):** जनसंख्यात्मक कारक भी सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जनसंख्या के आकार और घनत्व के घटने–बढ़ने से सामाजिक परिवर्तन हो जाने की सम्भावना होती है। जन्म दर के घटने और मृत्युदर के बढ़ने से जनसंख्या घटती है जिससे समाज में कार्यशील व्यक्तियों की कमी होती है और उपलब्ध समस्त प्राकृतिक साधनों का भरपूर उपयोग नहीं हो पाता। इससे देश की आर्थिक दशा गिरती है, परिवारों का आकार घटता है और इसके फलस्वरूप सामाजिक और पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन होता है।
8. **पृथकता की भावना (Degree of Insolation):** समाज में अनेक व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो अपने अस्तित्व को दूसरों से अलग रखना चाहते हैं। वे यह चाहते हैं कि उनकी संस्कृति सुरक्षित रहे और इसी कारण वे अन्य संस्कृतियों से कोई सम्पर्क नहीं रखना चाहते। जिस समाज में यह भावना होगी, जिस समाज के लोग अलगाव की भावना से ग्रस्त होंगे, उस समाज में परिवर्तन अपना सम्भव नहीं है। इसलिए यह भी सामाजिक परिवर्तन का एक बाधक तत्व है।
9. **युद्ध (War Factor):** आगवर्न ने युद्ध को सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक माना है। युद्ध के कारण अनेक नवीन आविष्कार होते हैं, नवीन व्यवस्थाओं जन्म लेती हैं। युद्ध को सामाजिक विघटन का एक विकृत रूप माना गया है। इसके कारण जन–धन की जनसंख्या कम हो जाती है, लोगों के नैतिक स्तर में गिरावट आती है और पराजित राष्ट्र को विजित राष्ट्र की शर्तों को, सामाजिक और राजनीतिक समानताओं को स्वीकार करना पड़ता है। इन सब बातों से समाज में भारी परिवर्तन आता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में चीन और पाकिस्तान के साथ हुये युद्धों ने भारतीयों के जीवन को बहुत प्रभावित किया।
10. **धर्म (Religion Factor):** चार्ल्स एलवुड के अनुसार धर्म सामाजिक परिवर्तन का एक कारक है। समाज और मनुष्य पर सदैव ही धर्म का शक्तिशाली नियंत्रण होता है। भारतयी समाज में धर्म की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। आर्य समाज, ब्रह्म समाज जैसे धार्मिक आन्दोलनों ने भारतीय जीवन में बहुत परिवर्तन किये हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान ने धर्म निरपेक्षता को अपना आदर्श माना है और इसका प्रभाव लोगों पर पड़ा है। आजकल भारत में आये दिन होने वाले धार्मिक सत्संगों और धार्मिक संत महात्माओं, साध्वीयों के प्रवचनों ने भी भारतवासियों के विचारों में भारी पविर्तन किया है।
11. **कानून (Law Factor):** सरकार द्वारा बनाये गये कानून जहाँ एक ओर सामाजिक नियन्त्रण बनाये रखने में सहायक होते हैं वहाँ दूसरी ओर सामाजिक परिवर्तन में भी सहायक होते हैं। कानून के द्वारा समाज के नियमों की रक्षा होती है और व्यक्ति नियमों का पालन करना सीखते हैं तथा जो लोग कानून का पालन नहीं करते, समाज विरोधी कार्य करते हैं, उनको दंडित किया जाता है, इससे समाज में व्यवस्था बनती है।
12. **राजनीतिक कारक (Political Factors):** मानव समाज का इतिहास अधिकांशतः राजनीतिक उथल पुथल का इतिहास है। समाज में अधिकतर परिवर्तन राजनीतिक कारणों से होते हैं। राजनीतिक स्थिरता से समाज में निरन्तरता और स्थायित्व आता है। जबकि अस्थिरता सामाजिक परिवर्तन को जन्म देती है।

समाज में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है और इस परिवर्तन को रोका भी नहीं जा सकती है लेकिन कुछ ऐसे तत्व हैं जो सामाजिक परिवर्तन के रास्ते में अनेक प्रकार की बाधायें प्रस्तुत करते हैं, वे बाधक तत्व निम्नलिखित है–

1. **नवीनतम का रूप (Fear of New Things):** समाज में अनेक व्यक्ति ऐसे होते हैं जो अपनी और समाज की वर्तमान स्थिति में पूरी तरह सन्तुष्ट होते हैं, उसी में आस्था रखते और उसी में अपनी सुरक्षा मानते हैं। वे सोचते हैं कि यदि उन्होंने किसी नवीन वस्तु या विचार को अपनाया तो उससे उनका अनिष्ट हो सकता है, इसलिए वे समाज में कोई परिवर्तन नहीं चाहते। ऐसी स्थिति में नवीनतायें समाज में कोई स्थान प्राप्त नही कर सकतीं।
2. **सांस्कृतिक जड़ता (Cultural Intertia):** समाज में अनेक व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो यह मानते हैं कि जो बातें, जो विचार और जो विश्वास हमारे पूर्वजों के हैं, वे बिल्कुल ठीक हैं, हमको उन्हें ही स्वीकार करना चाहिये। सांस्कृतिक जड़ता का अर्थ पूर्वजों से प्राप्त उन मूल्यों, विश्वासों और परम्पराओं से है जिनके कुछ लोग दास बन जाते हैं और किसी भी हालत में वे उनको छोड़ना नहीं चाहते। ऐसी स्थिति में सामाजिक परिवर्तन होना किसी भी दृष्टि से सम्भव नहीं है।
3. **निहित स्वार्थ (Vested Interests):** समाज में अनेक व्यक्ति ऐसे होते हैं जो उन्हीं कार्यों को करते हैं, जिनसे उनकी स्वार्थ सिद्धि होती है। वे कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहते जो उनकी स्वार्थ पूर्ति में बाधा डालता हो। ऐसे व्यक्तियों के लिए समाज का हित कुछ नहीं होता, अपना स्वार्थ ही प्रमुख होता है। उदाहरण के लिए हमारे देश में प्रिवीपर्स समाप्ति का विरोध राजाओं द्वारा किया गया और जमींदारी उन्मूलन का विरोध जमींदारों द्वारा किया गया। आरक्षण चाहे वह नौकरियों में हो और चाहे महिलाओं के संबंध में हो, निहित स्वार्थों द्वारा उनका विरोध किया जा रहा है। इस प्रकार के निहित स्वार्थ सामाजिक परिवर्तन के मार्ग की बाधा है।

आर्थिक बदलाव के कारक

1. **मानव संसाधन:** किसी देश के आर्थिक विकास के सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक में से एक संदर्भ देता है। उपलब्ध मानव संसाधन की गुणवत्ता और मात्रा किसी अर्थव्यवस्था के विकास को सीधे प्रभावित कर सकती है।
   मानव संसाधन की गुणवत्ता उसके कौशल, रचनात्मक क्षमताओं, प्रशिक्षण और शिक्षा पर निर्भर है। यदि किसी देश का मानव संसाधन अच्छी तरह से कुशल और प्रशिक्षित है, तो उत्पादन भी उच्च गुणवत्ता का होगा।
2. **प्राकृतिक संसाधन:** प्राकृतिक संसाधन किसी देश की आर्थिक वृद्धि को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। प्राकृतिक संसाधनों में ऐसे संसाधन शामिल होते हैं जो प्रकृति द्वारा या तो भूमि पर या जमीन के नीचे उत्पन्न होते हैं। भूमि पर संसाधनों में पौधे, जल संसाधन और परिदृश्य शामिल है।
3. **सामाजिक और राजनीतिक कारक:** किसी देश की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक कारकों में रीति–रिवाज, परंपराएँ, मूल्य और मान्यताएँ शामिल हैं, जो अर्थव्यवस्था के विकास में काफी हद तक योगदान करती हैं।
4. **पूंजी निर्माण:** भूमि, भवन, मशीनरी, बिजली, परिवहन और संचार माध्यमों को शामिल करता है। इन सभी मानव निर्मित उत्पादों का उत्पादन और अधिग्रहण पूंजी निर्माण के रूप में किया जाता है। पूंजी निर्माण से प्रति श्रमिक पूंजी की उपलब्धता बढ़ती है, जो पूंजी/श्रम अनुपात को और बढ़ाती है। नतीजतन, श्रम की उत्पादकता बढ़ जाती है, जिसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था के उत्पादन और विकास में वृद्धि होती है।
5. **तकनीकी विकास:** एक महत्वपूर्ण कारकों का संदर्भ देता है जो अर्थव्यवस्था के विकास को प्रभावित करता है। प्रौद्योगिकी में विधियों और उत्पादन तकनीकों का अनुप्रयोग शामिल है। दूसरे शब्दों में, प्रौद्योगिकी को एक निश्चित मात्रा में श्रम द्वारा प्रयुक्त प्रकृति और तकनीकी उपकरणों के प्रकार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

सामाजिक बदलाव के उपाय

1. अधिक से अधिक ज्ञान का प्रसार करना।
2. सामाजिक बदलावों का विश्लेषण शिक्षा द्वारा करना।
3. शिक्षा द्वारा सामाजिक बदलावों के रास्तों में रुकावटों को दूर करना।
4. शिक्षा का सार्वभौमिकरण।
5. नारी शिक्षा का प्रसार करके उनके सामाजिक स्तर को उठाना।
6. सामाजिक बदलावों के लिए जानकारी प्रदान करना।

सामाजिक व आर्थिक बदलाव में शिक्षा की भूमिका

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर शिक्षा का सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है। देश की अर्थव्यवस्था का पूरा चेहरा बदल गया। इसका कारण तेजी से बढ़ता हुआ औद्योगीकरण और मशीनीकरण।

औद्योगिक क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी हुई है। औद्योगीकरण होने के बावजूद भी भारत आज भी कृषि प्रधान देश हैं। अब भारत आत्मनिर्भर देश बन गया है। देश में लगभग सभी वस्तुओं का उत्पाद होता है, जैसे–सीमेण्ट, चीनी, चाय, कपड़ा, बिजली के उपकरण, समुद्री जहाज, हवाई जहाज, रैडार, टैंक और मिसाईल आदि। भारत सूती उद्योग का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादक देश है। स्कूटरों का दूसरा सबसे बड़ा देश है। चीनी उत्पाद में छठा सबसे बड़ा देश है। लेकिन कुछ स्थानों में हमारा देश पीछे है, जैसे– बिजली उत्पादन। लेकिन भारत की आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि आने वाले समय में भारत एक आर्थिक शक्ति के रूप में गिना जाएगा।

निष्कर्ष

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। संसार की प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन जड़ और चेतन सभी में दृष्टिगोचर होता है। प्रकृति में यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। परिवर्तन जीवन का नियम है। वे जो केवल अपने अतीत एवं वर्तमान को ही देखते रहते हैं, निश्चित रूप से अपने भविष्य को खो देते हैं। समाज मानव जीवन के प्रारम्भ से ही मनुष्य के साथ है और तब से लेकर आज तक समाज या सामाजिक जीवन में, उसके स्वरूप, संरचना, व्यवस्था, संगठन, आदर्श, मूल्य सभी में परिवर्तन की निरन्तर और अवश्यंभावी प्रक्रिया में कभी भी अवरोध नहीं आया। किसी भी ऐसे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती जो पूर्णतः स्थिर हो। परिवर्तन तो प्रत्येक समाज में होगा ही। अपरिवर्तनशील समाज का अस्तित्व हो ही नहीं सकता। आज दुनिया भर में देखा जाता है कि शिक्षित व्यक्ति ही रोजगार प्राप्त कर सकता है। अपनढ़ अच्छा व्यक्ति ज्यादा पैसे नहीं कमा सकता। ज्यादा शिक्षित व्यक्ति की आय ज्यादा होती है कम शिक्षित की आय कम होती है। शिक्षा का सीधा सम्बन्ध देश के आर्थिक निर्माण से है। एक शिक्षित व्यक्ति देश पर भार नहीं होता। ज्ञान से परिपूर्ण मन, उचित कौशल और वांछित दृष्टिकोण और सही ज्ञान देश के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। अच्छी प्रकार की शिक्षा दी जाए ताकि देश के विकास दर में बढ़ावा हो। इस प्रकार की शिक्षा द्वारा देश में वांछित सामाजिक बदलाव किया जा सकता है। शिक्षा द्वारा देश की गरीबी व बेरोजगारी आदि की समस्या को दूर किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. चौबे, सरजू प्रसाद (2009), आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. त्यागी, गुरसरनदास (2020), आधुनिक भारत एवं शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
3. पचौरी, गिरीश (2006), शिक्षा के सामाजिक आधार, आर0 लाल0 बुक डिपो
4. पाठक, पी0डी0 (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, विकास की अवस्थाएँ, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स,
5. रुहेला, एस. पी. (2005), विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
6. सक्सेना, एन0 आर0 स्वरूप, (2010) शिक्षा क दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर0 लाल0 बुक डिपो